

International Institute of Information Technology  
Mid-semester examination: 2025  
Readings from Hindi Literature

Time: 1½ Hr.

Max. marks: 25

1. निम्न पंक्तियाँ किन कवियों की रचनाओं में से ली गई हैं? इन में से **किसी एक पूरी** कविता पर विस्तार से चर्चा करें। विषय-वस्तु, रूप के अलावा सामाजिक और अन्य संदर्भों पर भी विस्तार से लिखें। समकालीन अन्य कवियों की रचनाओं के साथ कविता का तुलनात्मक विवेचन भी कीजिए।

(अ) लौट जाती है उधर को भी नज़र क्या कीजे  
अब भी दिलकश है तिरा हुस्न मगर क्या कीजे  
और भी दुख हैं ज़माने में मोहब्बत के सिवा  
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा  
मुझ से पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न माँग...

-----या -----

(ब) पर शाम है कि होगी ही  
रेफ़री है कि बाज नहीं आएगा  
सीटी बजाने से  
और स्टिक लटकाये हाथों में  
एक भीषण जंग से निपटने की  
तैयारी करती लड़कियाँ लौटेंगी घर ...

-----या -----

(स) किंतु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।  
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।  
पैर उखड़ेंगे। प्लवन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जाएँगे।

8

2. महादेवी वर्मा ने लिखा था 'पुरुष के लिए नारीत्व अनुमान है, परन्तु नारी के लिए अनुभव (A man imagines the woman, a woman experiences it)'। पढ़ी रचनाओं के आधार पर इस कथन पर विस्तार से टिप्पणी कीजिए। ..."

6

(कृपया पन्ना पलटिए)



3. पढ़ी गई कहानियों के आधार पर निम्न वक्तव्य पर टिप्पणी कीजिए (पक्ष और विपक्ष में उदाहरण लिखें):

कई साल पहले ने लिखा है: -

'रचना और विचार के संबंध इतने जटिल क्यों हैं? क्या यह सच है कि विचार के बिना रचना सिर्फ़ कलम-घसीटी या रिपोर्टिंग होती है और विचार, कला को मारकर स्वयं हावी हो जाता है? धर्म, संस्कृति, कला, साहित्य सभी का दावा है कि वे हमें 'बेहतर मनुष्य' बनाते हैं, वे न हों तो मनुष्य सींग-पूँछ के बिना नितांत पशु हैं। अंततः ये सभी उपक्रम कहीं न कहीं विचार ही हैं, और विचार हमें अपनी भौतिक सीमाओं से उठाकर बृहत्तर चिंताओं तक ले जाते हैं। हम सिर्फ़ अपने लिए नहीं, मनुष्य मात्र के विकास और उन्नयन की बात सोचते हैं। जिसे हम मानवीयता कहते हैं, वह भी कहीं मानव-कल्याण के लिए हमारी संवेदनाओं का सार्वभौमिक विस्तार है। यह एक ऐसा नैतिक बोध है, जो हमारे सारे कार्य-कलाप को साथी मनुष्य के संदर्भ में निर्धारित करता है। जो मेरे लिए ग़लत या सही है वह दूसरे के लिए भी ऐसा ही है। मानवीयता, समस्त मानवता के लिए उच्चतर मूल्यों की स्वीकृति और स्थापना है, नैतिक मूल्यों की चेतना मानव-कल्याण के समग्र बोध से शुरू होती है....'

[Why is the relation between creativity and ideology so complex?

Is it true that a written work without ideology is a mere collection of strokes of pen or reporting of events, and ideology destroys art, imposing itself? Religion, culture, art, literature, all of these claim that they make us a 'better human', devoid of them man is nothing but an animal without the horns and a tail. In the final analysis, these are all ideologies; and ideas elevate us to broader issues beyond our physical constraints. We think not merely for ourselves, we begin to think about every human being. What we call humanity, that must be a universal extension of our sensitivities towards human welfare. It is such a moral learning, that determines all that we do in reference to our fellow humans. What holds true or wrong for myself, must be the same for others too. Human values are the acceptance and coming together of higher values for the entire humanity. Moral awareness begins with a holistic understanding of human welfare....] 7

4. i) संस्थान के पुस्तकालय में उपलब्ध (available) किन्हीं दो साहित्यिक पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

1

ii) ग़ज़ल में रदीफ़ और काफ़िया से क्या तात्पर्य है? एक उदाहरण देते हुए समझाएँ।

3

ब्रौनस : . पिछले दस वर्षों में किसी भी भाषा में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किसी एक रचनाकार का नाम लिखें। वे किस विधा (genre) में लिखने के लिए जाने जाते हैं?

1